

# 48 घंटे में हटेंगी टावर

21-3-13 P.K

राजधानी के रिहायशी इलाके में लगे मोबाइल टॉवरों पर सरकार ने कड़ा रुख अंजितार किया है। इससे निकलवाले विकिरण के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव के मद्देनजर नगर विकास मंत्री ने बुधवार को विधान परिषद में कहा कि 48 घंटे के अंदर ऐसे टावरों को हटाने की कार्रवाई शुरू कर दी जायेगी। इसके बाद नगर निगम हरकत में आया और राजापुर पुल के पास बिना रजिस्ट्रेशन के लगाये गये एक मोबाइल टावर को सील कर दिया।

**संचाददाता** ■ पटना

राजधानी के रिहायशी क्षेत्र में लगे मोबाइल टावरों को हटा दिया जायेगा। 48 घंटे के अंदर इसकी कार्रवाई शुरू कर दी जायेगी। इस संबंध में नगर आयुक्त को निर्देश दिया गया है। रिहायशी इलाके, अस्सीताल, स्कूल आदि से 100 मीटर के दूरी पर ही मोबाइल टावर लगाने की अनुमति है। यह जानकारी नगर विकास मंत्री डॉ प्रेम कुमार ने बुधवार को विधान परिषद को दी।

**तीन दिनों में होगी जांच** : पार्षद वैद्यनाथ प्रसाद के अल्पसूचित प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि यह सही है कि मानव स्वास्थ्य पर मोबाइल टावरों से निकलनेवाले विकिरण का बुरा प्रभाव पड़ता है। रिहायशी क्षेत्र से 100 मीटर की दूरी पर मोबाइल टावर लगाना है।

शेष पृष्ठ 19 पर



784

मोबाइल  
टावर  
राजधानी  
में लगे हैं

534

मोबाइल  
टावर सिर्फ़  
निबंधित

अगर किसी क्षेत्र में पर्याप्त टावर नहीं रहें, तो मोबाइल से बात करने में उपभोक्ताओं को परेशानी होती है। नेटवर्क नहीं मिल सकेगा।

**अशोक कुमार**, बहाप्रबंधक (मोबाइल सेवाएं) शिलांग दूरदर्शन परियंत्रणा, पटना

स्कूलों व नर्सिंग होम की छतों पर भी हैं टावर

- कुर्जी गोड़ के पास निजी नर्सिंग होम की छत पर मोबाइल टावर लगा है
- पाटलिपुत्र में नेत्र रोग विशेषज्ञ के विलिंग की छत पर मोबाइल टावर लगा है
- बुद्ध कौलोनी में एक विद्यालय की छत पर मोबाइल टावर है।

- पोस्टल पार्क में भी एक निजी स्कूल की छत पर मोबाइल टावर लगा है।
- अशोक राजपथ में खजांगी रोड की ओर मुँगेवाली सड़क के कोने पर छत मवाल में मोबाइल टावर लगा है। इसके दूसरे तले पर निजी नर्सिंग होम है

## रेडिएशन का असर खतरनाक

मोबाइल टावर से निकलनेवाले इलेक्ट्रो मैरेनोटिक रेडिएशन का शरीर पर असर पड़ता है। इसका असर मरीजों पर चाला पड़ता है, क्योंकि उनमें प्रतिरोधक द्विमता की कमी होती है।

डॉ जेके सिंह, निदेशक, भावीर कैरर संस्थान



मोबाइल टावर से निकलनेवाली तरंगों काफी खतरनाक होती है। इससे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक प्रभावित हो सकते हैं। इसका मरिताक पर काफी गहरा प्रभाव पड़ता है, जिससे कभी भी एकाग्रता भी भंग हो जाती है।

डॉ राजीव रंजन, फिजिशियन

